ए निध निरमल अति घणी, दिए साथने सार।
कोमल चित करी लीजिए, जेम रुदे रहे निरधार।।७८ ।।

अब यह बेशक वाणी सुन्दरसाथ को सम्पूर्ण जानकारी देती है। इसलिए हे सुन्दरसाथजी ! चित्त को सरल बनाकर ग्रहण करें, जिससे उनकी वाणी हृदय में ठहरे।

पचवीस पख छे आपणा, तेमा कीजे रंग विलास।
प्रगट कह्या छे पाधरा, तमे ग्रहजो सहु साथ।।७९ ।।

हे साथजी! परम धाम के पच्चीस पक्ष अपने हैं। इसमें सदा चितवन करके आनन्द लें। धनी ने परमधाम का सीधा मार्ग बतला दिया है, जिसको हृदय में उतारें।

आपणू धन तां एह छे, जे दिए छे आधार।
रखे अधखिण तमें मूकतां, वालो कहे छे वारंवार।।८० ।।

वास्तव में अपनी सम्पत्ति परमधाम के पच्चीस पक्षों का सुख धनी हमें दे रहे हैं। धनी तो बार-बार कह रहे हैं कि आधे पल के लिए भी इस सुख को न छोड़ो।

पख पचवीस छे अति भला, पण ए छे आपणो धरम।
साख्यात तणी सेवा कीजिए, ए रुदे राखजो मरम।।८१ ।।

पच्चीस पक्षों का सुख अति सुखदायी तो है, परन्तु अब अपना कर्तव्य है कि साक्षात् धनी की सेवा में मग्न हो जाएं और इस भेद को अपने हृदय में रखें।

चित ऊपर वली चालिए, धणी तणे वचन।
ए वाणी तमे चित धरो, हूं कहूं छूं द्रढ करी मन।।८२ ।।

धनी के वचनों को हृदय में लेकर फिर से रहनी में आकर उसके अनुसार चलें। इस बात को हृदय में ले लो, मैं बार-बार समझाकर दृढ़ता से कहती हूं।

दई प्रदखिणा अति घणी, करूं दंडवत परणाम।
सहु साथना मनोरथ पूरजो, मारा धणी श्री धाम।।८३ ।।

परमधाम के पच्चीस पक्षों की बार-बार परिक्रमा करके धनी के चरणों में दण्डवत् प्रणाम कर विनती करती हूं कि हे धाम के धनी ! सब सुन्दरसाथ की मन की चाहनाओं को पूर्ण करो।

मनना मनोरथ पूरण कीधां, मारा अनेक वार।
वारणे जाय इंद्रावती, मारा आतमना आधार।।८४ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हे मेरी आत्मा के आधार धाम के धनी ! आपने सदा हमारी मनोकामना को पूर्ण किया है। मैं आपके चरणों पर बलिहारी (न्यौछावर) जाती हूं।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। ९० ।।

माया गई पोताने घेर, हवे आतम तूं जाग्यानो केर।
तो मायानो थयो नास, जो धणिए कीधो प्रकास।। १ ।।

धनी दुबारा कृपा कर आ गए। परमधाम के पच्चीस पक्षों का सुख देने लगे हैं। इसके सामने माया टिक नहीं सकती। माया अपने हृदय से हट गई है, इसलिए हे मेरी आत्मा ! अब तू जागने का प्रयत्न कर। धनी ने आकर जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया तो माया नष्ट हो गई है।

Nijanand App

केम जाणिए माया गई, अंतर जोत ते प्रगट थई।
हवे आतम करे कांई बल, तो वाणी गाऊं नेहेचल।। २ ।।

कैसे हम समझें कि माया ने हमें छोड़ दिया है? यह मेरी आत्मा गवाही (साक्षी) दे रही है। अब आत्मा थोड़ा-सा भी साहस करे तो अखण्ड वाणी का उच्चारण करूं।

लघु दीरघ पिंगल चतुराई, एह तो किवने छे बडाई।
एनो अर्थ हूं जाणू सही, पण आ निधमां ते सोभे नहीं।। ३ ।।

कविता की कला में कवि लोग छोटी-बड़ी मात्राएं बड़ी चतुराई से प्रयोग में लाते हैं। इसका सही अर्थ भी मैं समझती हूं, परन्तु इस वाणी में कविता की कला शोभा नहीं देती।

मारे तो नथी कांई किवनुं काम, वचन कहेवा मारे धणी श्री धाम।
जे आंहीं आवीने कह्या, गजा सारूं मारे चितमां रह्यां।। ४ ।।

मैं कोई कविता लिखने वाला कवि नहीं हूं। मुझे तो अपने धाम के धनी की वाणी का गान करना है, जो यहां आकर उन्होंने कही और मैंने अपनी बुद्धि अनुसार चित्त में ग्रहण की।

साथ आगल कहीस हूं तेह, पहेलां फेराना सनेह।
धणिए जे कह्यां अमने, सांभलो साथ कहूं तमने।। ५ ।।

अब पहले फेरे ब्रज में आकर हमारा आपस में कैसा अधिक प्रेम था, वह धनी ने हमें अब बताया। हे सुन्दरसाथजी ! मैं आपको कहती हूं, आप सुनो।

तमे जोपे ग्रहजो द्रढ मन करी, हूं तमने कहूं फरी फरी।
साथ सकल लेजो चित धरी, हूं वालोजी देखाडूं प्रगट करी।। ६ ।।

मैं बारम्बार आपसे कहती हूं कि हे सुन्दरसाथजी ! आप दृढ़ता से यह बात मन में रख लो कि मैं आपके सामने साक्षात् राजजी महाराज के दर्शन कराती हूं। जिसको आप चित्त में धारण कर लेना।

श्री देवचंदजी ने लागूं पाय, जेम आ दुस्तर जोपे ओलखाय।
दई प्रदखिणा करूं परणाम, जेम पोहोंचे मारा मननी हाम।। ७ ।।

इस कठिन माया की अच्छी तरह से पहचान करने के लिए और मन की सभी चाहनाओं की पूर्ति के लिए सतगुरु श्री देवचन्द्रजी की परिक्रमा लगाकर चरणों में प्रणाम करती हूं।

जेटली सनंध कही छे तमे, ते द्रढ करी सर्वे जोइए अमे।
लीला तमे कही अपार, तेह तणो नव लाधे पार।। ८ ।।

रहस्य की जो बातें आपने कही, उन सबको दृढ़ता के साथ मैंने देखा और परमधाम ब्रज रास की जिन लीलाओं का आपने वर्णन किया, उसका तो कोई शुमार ही नहीं है।

चौद भवन माया अंधार, पार नहीं मोटो विस्तार।
तमने पूछूं समरथ सार, हूं केणी पेरे करूं विचार।। ९ ।।

इस चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में माया का ही अंधेरा है जिसका पारावार नहीं है। इसलिए, हे मेरे धनी! ऐसा कौन-सा ठोस मार्ग है, जिस पर मैं विचार करके पार उतर सकूं।

Nijanand App

तमे तारतमना दातार, अजवालूं कीधूं अपार।
साथ तणां मनोरथ जेह, सर्वे पूरण कीधां तेह।। १० ।।

आप जागृत बुद्धि के ज्ञान के दाता हैं और आपने इससे बेशुमार (अनन्त) प्रकाश किया है। सुन्दरसाथ की इच्छाओं को सब प्रकार से आपने पूर्ण किया है।

तारतम तणे अजवास, पूरण मनोरथ कीधां साथ।
तम तणे चरण पसाय, जे उत्कंठा मनमां थाय।। ११ ।।

आपने चरण कमल की कृपा से तथा तारतम वाणी के प्रकाश से सुन्दरसाथ की चाहनाओं को आपने पूर्ण किया है।

जेटली मनमां उपजे वात, ते सहु आतम पूरे साख।
मन जीवने पूछे जेह, त्यारे जीव सहु भाजे संदेह।। १२ ।।

मेरे मन में जो बातें उपजती हैं, उन सबका उत्तर अन्दर आत्मा से ही मिल जाता है। मन में जो संशय उठता है, उन सबका उत्तर जीव ही दे देता है।

ए निध बीजे कोणे न अपाय, धणी विना केहेने सामूं न जोवाय।
एणें अजवाले थए सूं थाय, आ पोहोरा मां धणी ओलखाय।। १३ ।।

यह न्यामत (जागृत बुद्धि का ज्ञान) दूसरे को नहीं दी जाती है। धनी के बिना न तो कोई इसे दे सकता है और न ही कोई दिखा ही सकता है। ऐसा विश्वास करने से इस कठिन समय में भी धनी की पहचान हो जाती है।

आप तणी पण खबर पडे, घर पर आतम रुदे चढे।
ए अजवालूं ज्यारे थयूं, त्यारे वली पाछूं सूं रह्यूं।। १४ ।।

इस जागृत बुद्धि से जब ज्ञान मिला तो अपने घर परमधाम की मूल-मिलावा में बैठी परआतम की तथा अपने घर के पच्चीस पक्षों की पहचान हो गई । फिर बाकी क्या रहा?

ए सूं माया करे बल, फेरवे कल करे विकल।
अजवालामां ना रहे चोर, जागतां नव चाले जोर।। १५ ।।

यह माया अपने बल से क्या करती है? बुद्धि को फेरकर बेसुध करती है। जैसे उजाले में तथा जब घर का मालिक जाग रहा हो, तो चोर चोरी नहीं कर सकता, इसी प्रकार माया भी हमारी जागृत अवस्था में तारतम ज्ञान के प्रकाश में हमें बेसुध नहीं कर सकती।

जदिप ते जीते विद्याए, पण एने अजाण्यूं नव जाय।
ज्यारे वालोजी सहाय थाय, झख मारे त्यारे मायाय।। १६ ।।

माया के ब्रह्माण्ड के अन्दर शास्त्रों की चतुराई से संसार के लोगों को जीता जा सकता है, परन्तु इससे उस पारब्रह्म जो अनजाना है, की पहचान नहीं होती, परन्तु जब स्वयं धनी मददगार हो जाते हैं तो फिर वहां माया की कुछ भी चतुराई नहीं चल सकती (झख मारकर रह जाती है)।

ते माटे तमे सुणजो साथ, एक कहूं अनुपम वात।
चरचा सुणजो दिन ने रात, आपणने त्रूठा प्राणनाथ।। १७ ।।

इसलिए प्यारे सुन्दरसाथजी ! एक अनोखी (अनुपम) बात कहती हूं उसे सुनो, कि इस ब्रह्माण्ड में धनी अपने ऊपर फिदा हो गए हैं, इसलिए इनकी मीठी-मीठी बातें (चर्चा) रात-दिन सुनो।

Nijanand App

वचन कह्या ते मनमां धरो, रखे अधखिण पाछा ओसरो।
आ पोहोरो छे कठण अपार, रखे विलंब करो आ वार।। १८ ।।

धनी जो वचन कहते हैं उनको हृदय में धारण करो और आधा पल के लिए भी उनके वचनों से विमुख मत होना। यह समय बड़ा कठिन है, सावधान रहने का है। इसलिए इस बार अब देर मत करो क्योंकि धनी दूसरी बार आये हैं।

आ जोगवाई छे जो घणी, सहाय आपणने थया धणी।
बेठ्या आपण मांहें कहे, पण साथ माहें कोई विरलो लहे।। १९ ।।

यह सुन्दर समय (चर्चा, कलियुग, मनुष्य तन, भारत खण्ड तारतम ज्ञान, आदि) प्राप्त हुआ है और धनी भी अपने मददगार हो गए हैं। वह अपने बीच बैठकर (मेहराज ठाकुर के तन में) चर्चा सुनाते हैं, किन्तु साथ में से कोई-कोई ही ग्रहण करते हैं।

साथ मांहें अजवालूं थयूं, पण भरम तणूं अंधारूं रह्यूं।
ते टाल्यानो करूं उपाय, तो मनोरथ पूरण थाय।। २० ।।

सुन्दरसाथ ने तो चर्चा सुनकर धनी की पहचान कर ली, परन्तु शास्त्रों के तर्क में ज्ञानी लोगों को, विद्वानों को अन्धकार ही रहा, उसको भी टालने का मैं उपाय करती हूं, जिससे उनको भी धनी की पहचान होकर उनकी मनोकामना पूर्ण हो जाय।

जे मनोरथ मनमां थाय, ततखिण कीजे तेणें ताय।
आ जोगवाई छे पाणीवल, आपण करी बेठा नेहेचल।। २१ ।।

यह सुन्दर अवसर जिसे हम अखण्ड समझ बैठे हैं, पल भर का है, इसलिए मन में जिस शुभ कार्य की इच्छा आए उसे तुरन्त कर डालें।

नेहेचल जोगवाई नहीं एणे ठाम, अधखिणमां थाय कई काम।
इंद्रावती कहे आ वार, निद्रा नव कीजे निरधार।। २२ ।।

यह सुन्दर अवसर (मनुष्य तन) अखण्ड नहीं है। आधे ही पल में हालात बदल जाते हैं, इसलिए श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि इस बार आराम से मत बैठो, अर्थात् सोते मत रहो (जागो अणे जगाओ)

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ ११२ ॥

राग मारू

भूडां जीव जागजे रे
कांई धणी तणें चरण पसाय, तू भरम उड़ाडजे रे।। टेक १ ।।

मोहजल (माया का ब्रह्माण्ड) तथा माया की पहचान कर उससे बचने का उपाय बताने के बाद अब इस पापी जीव को जागने का रास्ता दिखाया जा रहा है। उसे सम्बोधन किया गया है कि धनी के चरणों की कृपा से बेशकी का ज्ञान मिल गया है, इसलिए इस वाणी से अपनी शंकाओं का निवारण कर जाग जा।

आपण निद्रा केम करूं, निद्रानो नथी लाग।
भरमनी निद्रा जे करे, कांई तेहेनो ते मोटो अभाग।। २ ।।

हे सुन्दरसाथजी! वाणी मिलने पर भी यदि हमारे संशय मिटे नहीं तो यह हमारी बदनसीबी है। अब हमारे भूलने का समय नहीं है, इसलिए अब हमें माया में नहीं भूलना चाहिए।

Nijanand App